Result Mitra Daily Magazine

गाँधीवादी विचार में महिला उत्थान

हालिया संदर्भ :

- महिलाओं के खिलाफ लगातार बढती हिंसाओं के बीच लैंगिक समानता पर बहस महिला-अधिकारों पर महात्मा गाँधी के दृष्टिकोण से जुड़ने का आह्वान करता दिखाई देता है।
- गाँधी के 155वीं जयंती (02 October) के अवसर पर गाँधीवादी दृष्टिकोण को पुनजीर्वित करने की कोशिश होनी चाहिए।

राष्ट्रवादी आंदोलन और महिला :

- भारत में राष्ट्रवादी आंदोलन का उदय स्वदेशी परंपराओं एवं लैंगिक असमानता के जटिल संरचना से जुड़ा हुआ था।

- सती प्रथा पर प्रतिबंध (1829), पर्दा प्रथा पर रोक, महिला शिक्षा को बढ़ावा देना, विधवा पुनर्विवाह एक्ट पारित होना (1856) एवं महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के उदय से जुड़े हुए थे।
- राजा राममोहन राय, डी. के. कर्वे, ईश्वर चंद्र विद्यासागर एवं विष्णु शास्त्री पंडित जैसे सुधारकों ने महिलाओं को आधुनिक भारत में उचित महत्व दिलाने के लिए अथक प्रयास किए।
- गाँधी के दौर में महिलाओं के प्रचलित धारणा में परिवर्तन आया।
- उन्होंने पश्चिमी सभ्यता, संसदीय लोकतंत्र एवं अंग्रेजी शिक्षा को पूर्णत: अपनाने से इनकार कर दिया तथा आत्मनिर्भरता एवं आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देकर महिला–उत्थान करने का प्रयास किया।
- उन्होंने पारंपरिक स्त्री के गुणों जैसे पवित्रता, त्याग और सेवा जैसे महिला के स्वाभाविक गुणों पर ध्यान केंद्रित किया।
- गाँधी जी ने अपने साप्ताहिक पत्रिका 'नवजीवन'(स्थापित–1919) में महिला को इन गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

स्वदेशी आंदोलन में महिला :

- 20वीं सदी से पहले भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका नगण्य थी, लेकिन 1905 में बंगाल–विभाजन के बाद शुरू हुए स्वदेशी आंदोलन में महिलाओं की भूमिका सराहनीय रही।

- 16 अक्टूबर 1905 को राजेंद्र सुंदर त्रिवेदी ने 'अरंदन दिवस' मनाने की घोषणा की, जिसमें महिलाओं को विरोध प्रदर्शन के लिए घरों से बाहर निकलना था।

Result Mitra

बढ़ती भागीदारी :

- कादंबिनी गांगुली ने मद्रास अधिवेशन (1890) में भाग लिया, जो कांग्रेस अधिवेशन में शामिल होने वाली पहली महिला बनी।
- 1906 के कलकत्ता अधिवेशन में कादंबिनी गांगुली ने महिला सम्मेलन की अध्यक्षता की, जिसमें उनके साथ रवीन्द्रनाथ टैगोर की बहन एवं उपन्यासकार स्वर्ण कुमारी देवी भी मौजूद थी।
- 'भारत स्त्री मंडल' (सरला देवी चौधरानी द्वारा 1910 में स्थापित) एवं 'भारत माता' की प्रतिष्ठित पेंटिंग, (अबिनिंद्रनाथ टैगोर द्वारा निर्मित) जिसमें 'भारत माता' को भगवा वस्त्र, शांत चेहरा, चमकता प्रभा मंडल एवं हाथों में माला एवं शास्त्र लिए दर्शाया गया है, ने आंदोलनों में महिलाओं की उपस्थिति को बढ़ावा देने में भूमिका निभाई।

गाँधी के सत्याग्रह में स्त्री-गुण :

- महिलाओं के संबंध में गाँधी जी का सबसे बड़ा योगदान आंदोलन में भाग लेने के लिए इन्हें प्रोत्साहित करना था।
- दक्षिण अफ्रीका में 1913 के 'Black Act' के तहत अश्वेत विवाहों को पंजीकृत करवाना अनिवार्य था एवं पंजीकृत विवाह को 'अवैध' करार दिया जाता था।
- गाँधी जी ने इस एक्ट का विरोध किया, जिसमें बहुत बड़ी संख्या में महिलाओं ने गाँधी जी का साथ दिया।
- इसी आंदोलन के दौरान पहली बार भारतीय महिलाएं जेल गई।
- इस आंदोलन के दौरान गाँधी जी ने अहिंसा, सहिष्णुता, बलिदान एवं नैतिकता को स्त्री–सत्याग्रह का प्रमुख गुण माना।
- गाँधी जी के लिए आदर्श स्त्री में सीता, द्रोपदी एवं दमयंती जैसे गुण होने चाहिए।

Result Mitra

- गाँधी ने महिलाओं को 'पत्नीत्व' से 'बहन' बनने के लिए भी प्रेरित किया। उन्होंने महिलाओं को वासना के स्रोत से 'पवित्रता', बंधन से 'स्वतंत्रता' एवं अज्ञानता से शिक्षा की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

विरोधाभास :

- गाँधी ने महिलाओं को घरेलू भूमिका से बाहर निकलने में भूमिका निभाई, लेकिन शुद्ध एवं पुण्य नारीत्व पर जोर देखकर उन्होंने महिलाओं के अवसरों को भी सीमित कर दिया।
- पारंपरिक नैतिकता का पालन नहीं करने वालों को गाँधी ने अपने कार्यक्रमों से दूर रखा। जैसे कि गाँधी ने सेक्स वर्कों को कांग्रेस के अभियानों से दूर रखा, जिससे महिला समाज में भेदभाव उत्पन्न हुआ।
- साबरमती आश्रम की स्थापना (1917) से ही गाँधी ने आदर्शों को ध्यान में रखते हुए महिलाओं की भर्ती की।
- मैडेलिन स्लेड 'मीरा बहन' द्वारा लिखित 'The Spirit's Pilgrimage' में वर्णन है कि गाँधी ने आश्रम की महिलाओं के लिए सोने के आभूषण का दान अनिवार्य कर रखा था ताकि 'स्वराज' आंदोलन में धन की कमी ना हो।
- इसी पुस्तक में वर्णन है कि कस्तूरबा गाँधी (गाँधी की पत्नी) आश्रम में निचली जाति की महिलाओं के रहने से नाराज थी।
- गाँधी ने एक दलित बेटी लक्ष्मी को गोद लिया था, जो आश्रम में रहने वाली पहली दलित थी।
- गाँधी जी ने दक्षिण अफ्रीका से आने के बाद 25 मई 1915 को अहमदाबाद के निकट कोचरब में पहला आश्रम स्थापित किया।
- 17 जून 1917 को इस आश्रम को साबरमती नदी के किनारे स्थानांतरित किया गया।

Result Mitra

- साबरमती आश्रम का दूसरा नाम हरिजन आश्रम था तथा यह 1917–1940 तक गाँधी जी का आवास भी रहा।

सविनय अवज्ञा में महिलाओं की भूमिका :

- असहयोग आंदोलन के दौरान शराब की दुकानों पर धरना देने एवं पूर्ण शराबबंदी अभियान को लागू करने में विफल रहने के लिए गाँधी जी ने कांग्रेस के पुरुष स्वयंसेवकों को जिम्मेदार ठहराया।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान गाँधी ने खादी, चरखा एवं शराब बंदी अभियान का नेतृत्व महिला शाखा को सौंप दिया था।
- महिला शाखा में सरोजिनी नायडू, हंसा मेहता एवं कमलादेवी चट्टोपाध्याय जैसी महिलाओं ने नेतृत्व प्रदान किया था।
- धरसाना में नमक मार्च के दौरान सरोजिनी नायडू का नेतृत्व एवं 1925 के कानपुर अधिवेशन में उनके द्वारा किए गए अध्यक्षता ने दर्शाया कि महिलाएं प्रदर्शन से आगे बढ़ चुकी है।
- वल्लभभाई पटेल की अध्यक्षता में 1931 (कराची अधिवेशन) में महिला–मुद्दों को प्रमुखता मिली, जिसमें महिलाओं को वोट देने एवं परिषद चुनाव में भाग लेने के अधिकार पर जोर दिया गया।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान जातिगत एवं आर्थिक भेदभाव से ऊपर उठकर बॉम्बे की जेलों में महिलाओं ने गिरफ्तारी दी।
- नागालैंड की रानी गाइडिन्ल्यू ने अल्पायु से ही ईसाई मिशनरियों का विरोध किया एवं 1931 में आंदोलन के दौरान गिरफ्तार हुई तथा 1947 में आजादी के बाद उन्हें रिहाई मिली।

महिला संगठन :

- 1920 के दशक में महिला नेतृत्व वाले संगठनों ने साकार रूप लेना शुरू किया।

Result Mitra

- मेहरबाई टाटा, महारानी सुचारू देवी एवं कॉर्नेलिया सोहराबजी ने 1925 में महिलाओं के लिए राष्ट्रीय परिषद की स्थापना की।
- श्रीमती मार्गरेट काजिन्स ने 1927 में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की स्थापना की, जिसने 1937 में हिंदू महिलाओं के लिए संपत्ति अधिकार एक्ट पारित होने पर अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई।

आलोचनाएं :

- स्वदेशी आंदोलन के दौरान शुरू हुए आर्थिक आत्मनिर्भरता को गाँधी ने चरखा सत्याग्रह के साथ, विशेषकर विधवा महिलाओं के संदर्भ में, चरम अवस्था तक पहुंचने में मदद की।
- गाँधी ने घर एवं धार्मिक कर्तव्यों तथा स्त्रीत्व की सारी जिम्मेदारियां महिलाओं पर डाल दी, साथी ही उन्हें सामाजिक समस्याओं के समाधान के रूप में पेश किया। यह सिद्धांत आलोचनाओं का कारण बना।
- उन्होंने महिला शिक्षा को बढ़ावा तो दिया लेकिन पुरुष एवं स्त्री के बीच प्राकृतिक अंतर को मानते हुए उन्होंने बच्चों के पालन–पोषण को मुख्यतः महिलाओं का ही काम माना।
- वैसे गाँधी ने महिलाओं के घरेलू गुलामी की निंदा की एवं लैंगिक आध्यात्मिक समानता पर बल दिया, लेकिन उन्होंने महिलाओं को पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित रहने के लिए प्रेरित किया।
- उन्होंने महिलाओं से द्रौपदी, सीता एवं दमयंती के चरित्र अनुसरण करने को कहा, लेकिन पुरुषों के लिए ऐसे किसी प्रकार की पाबंदी नहीं थी।
- वास्तव में गाँधी जी ने महिलाओं के भौतिक अधिकारों की वकालत करने के बजाय नैतिक गुणों एवं निस्वार्थ सेवा–भाव को प्रोत्साहित किया।

Result Mitra